अस्मिता दर्शन : अस्मिता की अवधारणाएँ

प्रस्तुतकत्री
डॉ. सरोज पाठक
सहायक प्राचार्य
हिन्दी–विभाग
आर.डी.एस.कॉलेज, मुजफ्फरपुर

अस्तित्व बोध की प्रधानता होती है अर्थात् व्यक्ति और समुदाय समाज में अपनी विशेष अस्मिता को बनाए रखना चाहते हैं परिवेश के साथ अलगाव की भावना व्यक्ति में अस्मिता का प्रश्न उठाती है।

'अस्मिता' शब्द की व्युत्पत्ति परक अर्थ के विषय में विभिन्न विद्वानों के मत इस प्रकार हैं–

वामन शिवराम आप्टे– अस्मिता शब्द की निर्मिति अस्मि + तम् + टाप से हुयी है जिसका अर्थ है– 'अहंकार'।

आदर्श हिन्दी शब्द कोश में भी 'अस्मिता' शब्द के लिए आत्मश्लाधा, अहंकार मोह आदि के अर्थ दिए गए हैं।

'अस्मि' शब्द अस् + गिन् से बना है। अस्मि अर्थात् मैं हूँ। अस्ति की भाववाचक संज्ञा 'अस्मिता' है। इस शब्द से स्वत्व का बोध होता है।

''यह एक ऐसा दायरा है जिसके तहत व्यक्ति और समुदाय यह बताते हैं कि वे खुद को क्या समझते हैं। अस्मिता का यह दायरा अपने–आप में एक बौद्धिक, ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक संरचना का रूप ले लेता है जिसकी रक्षा करने के लिए व्यक्ति और समुदाय किसी भी सीमा तक जा सकते हैं।''

स्वातंत्र्योत्तर भारत में अस्मिता का प्रश्न मात्र विचारधारा के रूप में नहीं अपितु आंदोलन के रूप में सामने आया है। व्यक्ति के समक्ष वैयक्तिक अस्मिता के साथ–साथ अन्य वर्गगत अस्मिताओं का प्रश्न भी उठ खड़ा हुआ है। वैयक्तिक अस्मिता का प्रश्न उठता है वहीं अन्य अस्मिताओं में

दलित–अस्मिता, आदिवासी–अस्मिता, अल्पसंख्यक–अस्मिता क्षेत्रीय–अस्मिता, भाषायी–अस्मिता, राष्ट्रीय–अस्मिता इत्यादि के प्रश्न उठ खड़े हुए हैं।

अस्मिता प्राप्ति के संघर्ष की शुरूआत अपने वंचित, पीड़ित और प्रताडित होने के अहसास से शुरू हो जाती है जिससे अपनी पहचान को प्राप्त करना सबसे बड़ा उद्येश्य हो जाता है। अधिकारों से वंचित वह समाज के द्वारा किए गए अन्याय और सदियों से होते आ रहे शोषण के खिलाफ खड़ा हो जाता है। अर्चना वर्मा के अनुसार– ''अस्मिता एक हद तब संबद्धता, सरोकार, लगाव और अपनत्व का प्रश्न भी है जिसे अंग्रेजी में 'सेंस ऑफ बिलॉनगिंग' कहा जाता है।''

नामवर सिंह 'अस्मिता' शब्द से परहेज करते हैं। इसके विषय में उनका मानना है कि 'मेरी जानकारी में हिन्दी में 1950 के आस–पास अज्ञेय जी ने आइडेंटिटी के अर्थ में 'अस्मिता चलाया'।

उनका यह भी मानना है कि व्यक्ति की एक अस्मिता नहीं होती अपितु अनेक अस्मिताएँ होती होती अपितु अनेक अस्मिताएँ होती हैं परिस्थितियों के अनुसार कभी एक तो कभी दूसरी अस्मिता महत्वपूर्ण हो जाती है। वे कहते हैं ''अस्मिता दया नहीं चाहती। अस्मिता हक चाहती है।''

अस्मिता पर खतरा पैदा होता है और मांगने पर भी अपने अधिकार, अपनी पहचान नहीं मिलती है तो हिंसा जन्म लेती है। जिन्होंने उपेक्षा का जीवन भोगा है और अपने विश्वासों, अपने हकों को प्राप्त करना चाहा है तो वहाँ हिंसक हो जाना शायद परिस्थिति जन्य है। अस्मिता पर आया संकट व्यक्ति को विद्रोही बना देता है।

'''अस्मिता' अपनी निजी पहचान के साथ–साथ उस क्षेत्र और समाज की पहचान भी है जो हमारे संदर्भ तय करते हैं। ये संदर्भ जाति, रंग, वर्ग, नस्ल, क्षेत्र, भाषा, जेंडर, पेशे इत्यादि के रूप में हमारे अंतरंग (साइकी) के हिस्से हैं।'

विमर्श शब्द : अर्थ एवं स्वरूप

'मानक हिन्दी कोश' में विमर्श का अर्थ–विचारण, आलोचना, व्याकुलता, क्षोभ और उद्वेग है। अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश में 'विमर्श' का अर्ध भाषण, प्रवचन, प्रबंध दिया गया है। अभय कुमार दूबे के अनुसार– इसका निपट अर्थ है दो वक्ताओं के बीच संवाद या बहस या सार्वजनिक चर्चा।

अतः हम कह सकते हैं कि भाषण, परीक्षा, आलोचना, विचारण, विवेचन, गुणदोष की मीमांसा आदि सभी शब्द विमर्श के ही समानार्थी हैं।

विमर्श शब्द जहाँ जागरूकता का परिचायक है वहीं इसके द्वारा सामाजिक स्तर पर समस्या से निजात भी दिलवाता है। किसी भी समाज में व्यक्ति और जाति को चेतना कर दिशाहीनता से बचाता है।